श्रावकों का वर्णन है। आनंद गाथापति का वर्णन प्रथम अध्ययन में आया है, जिसका वर्णन हम इसी आगम के आधार पर कर रहे हैं।[1]

उस समय प्रभु महावीर ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए वाणिज्यग्राम में पधारे। वहां का राजा जितशत्रु था। वह अपनी प्रजा के साथ प्रभु महावीर के दर्शनार्थ आया। वहां समवसरण लगा हुआ था। प्रभु महावीर का मंगलमय प्रवचन चल रहा था। उसी नगर में आनंद नाम का श्रेष्ठी रहता था। उसके पास करोड़ों की सम्पत्ति, विशाल खेत, समुद्री जहाज व गायों के झुंड थे। उसने नगर में अद्‌भुत चहल-पहल देखी। उसे पता चला कि जगद्‌गुरू श्रमण भगवान महावीर पधारे हैं, लोग उनका प्रवचन सुनने, उनकी वन्दना करने जा रहे हैं।

वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने स्नान किया, शुद्ध वस्त्र पहने, आभूषणों से शरीर को अलंकृत किया। फिर वाणिज्यग्राम के मध्य से गुजरता द्युतिपलाश चैत्य में पहुंचा। यहीं पर प्रभु महावीर अपना धर्म उपदेश दे रहे थे। आनंद ने तीन बार आदक्षिणा-प्रदक्षिणापूर्वक प्रभु महावीर को वन्दन नमस्कार किया। फिर योग्य स्थान ग्रहण कर प्रभु महावीर का उपदेश सुनने लगा। उपदेश उसे रुचिकर लगा। उसे प्रभु महावीर के निर्ग्रंथ प्रवचन पर अथाह श्रद्धा हो गई। प्रवचन सम्पन्न होने के पश्चात् उसने प्रभु महावीर से निवेदन किया-

"प्रभु! मैं साधु जीवन ग्रहण करने में असमर्थ हूं इसलिए मैं आपसे गृहस्थ के द्वादश व्रत ग्रहण करना चाहता हूं।"

प्रभु महावीर ने कहा- "देवानुप्रिय! जैसे आपकी आत्मा को सुख हो, वैसा करो। पर शुभ कार्य में प्रमाद मत करो।"

इस प्रकार आनंद गाथापति "श्रमणोपासक" बन गया। उसकी धर्मपत्नी शिवानंदा ने भी अपने पति का अनुकरण किया। इन व्रतों, नियमों व आनंद श्रावक को अवधिज्ञान का वर्णन इसी शास्त्र में आया है। हम यथा स्थान पर आनंद के अवधिज्ञान का वर्णन करेंगे।

इन्द्रभूति गौतम ने भगवान से प्रश्न किया- "प्रभु! क्या आनंद श्रावक श्रमण बनने में समर्थ है?"

प्रभु महावीर ने कहा- "गौतम! ऐसा नहीं है। श्रमणोपासक आनन्द साधु नहीं बनेगा। यह लम्बे समय तक इन व्रतों की आराधना करेगा। अंतिम समय अनशनपूर्वक शरीर-त्याग, सौधर्मकल्प नामक स्वर्ग में अरुणाभ विमान में उत्पन्न होगा। इस देवलोक में उसकी आयु चार पल्योपम की है।" इस प्रकार प्रभु महावीर ने वाणिज्यग्राम के आस पास के ग्रामों में धर्म-प्रचार किया। फिर वर्षावास का समय बिताने वाणिज्यग्राम में आ गए। प्रभु महावीर का पन्द्रहवां चातुर्मास इसी वाणिज्यग्राम में सम्पन्न हुआ, जहां अनेक भव्य जीवों ने अपनी आत्मा का कल्याण किया। वाणिज्यग्राम का वर्षावास पूरा करने के बाद आप पुनः मगध देश में पधारे।

सोलहवां वर्ष

प्रभु महावीर वाणिज्यग्राम से मगध देश की राजधानी राजगृही पधारे। वहां आपका समवसरण गुणशील चैत्य में लगा। राजा श्रेणिक अपने राजकुमारों, राजकुमारियों, सैनिकों, महारानियों से घिरा हुआ बड़ी शान के साथ प्रभु महावीर को वन्दन करने लगा। उसने प्रभु महावीर का प्रवचन सुना। उस समय प्रभु महावीर के प्रमुख गणधर इन्द्रभूति गौतम ने प्रभु महावीर से काल के संबंध में प्रश्न पूछे,

जिनका विवरण भगवतीसूत्र के शतक ६, उद्देशक ७ में उपलब्ध है।

धन्ना शालिभद्र की प्रव्रज्या

इसी वर्षावास में धन्ना और शालिभद्र ने प्रव्रज्या ग्रहण की थी। शालिभद्र राजगृह के ऐसे परिवार में संबंध रखता था, जिसकी धन सम्पत्ति के सामने मगध सम्राट श्रेणिक की सम्पत्ति तुच्छ थी। वह धनाढ्य गोभद्र का पुत्र था। उसकी माता का नाम भद्रा तथा बहिन का नाम सुभद्रा था। सुभद्रा की शादी श्रेष्ठी धन्ना से सम्पन्न हुई थी। जब शालिभद्र बहुत छोटा था, तो उसके पिता ने प्रभु महावीर से श्रमण दीक्षा ग्रहण की थी। वह मरकर देवलोक में उत्पन्न हुए।[२] शालिभद्र मातृ-स्नेह में पला था। उसकी माता भद्रा सारा व्यापार स्वयं देखती थी। गोभद्र जो देव बना था, वह अपने पुत्र और पुत्र-वधुओं के सुख-भोग के लिए रोजाना ३३ पेटियां देवलोक से वस्त्र-आभूषणों की प्रदान करते थे। उनका महल सात मंजिला था। उस महल में मुनीमों, नौकरों के आवास भी थे। अनेक दास-दासियां रहते थे। इसी महल की सातवीं मंजिल पर रात दिन सुख भोग में तल्लीन शालिभद्र रहता था।

जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी घटती हैं कि जीवन को पलटकर रख देती हैं। माता भद्रा जहां आदर्श माता थीं, वहां वह देश-भक्ति की जीती-जागती प्रतीक थीं। उसे यह पसंद नहीं था कि कोई उसके देश के राजा व देश के प्रति अपमानजनक भाषा बोले। आज हम स्त्री जाति की जागृति की बात करते हैं। आज से २,६०० साल पहले प्रभु महावीर का प्रभाव था कि स्त्रियां धर्म के साथ साथ व्यापार के क्षेत्र में भी किसी सीमा तक आ चुकी थीं। यह नारी जागृति का सुन्दर उदाहरण है। उस एक ही घटना ने शालिभद्र व धन्ना के समस्त परिवार को भोग से त्याग का मार्ग दिखा दिया।

एक बार नेपाल देश से रत्नकम्बल बेचने वाले आए। उन व्यापारियों के पास १६ रत्नकम्बल थे। हर कम्बल की कीमत सवा लाख स्वर्ण मुद्राएं थीं। सारे राजगृह में उनका एक कम्बल भी न बिका। कंबल न बिकने के कारण व्यापारी परेशान हो चुके थे। फिर वह मगध सम्राट श्रेणिक के दरबार में गए। राजा कीमत सुनकर चुप हो गया। उसकी प्रिय रानी चेलना कम्बल की मांग कर रही थी, पर अधिक कीमत के कारण राजा श्रेणिक खरीद न पाए।

आखिरी आशा भी समाप्त हो गई। व्यापारियों ने वापस जाने का निर्णय लिया। सुबह का समय था। व्यापारी आपस में बातें कर रहे थे- यह कैसा शहर है? कैसा देश है? यहां के सब लोग निर्धन हैं। यहां की प्रजा के साथ साथ राजा भी निर्धन है जो एक कम्बल खरीदने में असमर्थ है।''

यह बात शालिभद्र की पानी भरने आई दासियों ने सुन ली। उन्होंने व्यापारियों से पूछा- ''भैया! क्या बात है? आप हमारे देश की निंदा क्यों कर रहे हो? राजा प्रजा को बुरा भला क्यों कह रहे हो?''

व्यापारियों ने सारी आपबीती दासियों से कह डाली। दासियों ने कहा- ''भैया! आप हमारी मालकिन के पास चलो। शायद कोई समाधान निकल आए।'' दासियों की बात सुनकर व्यापारी कुछ असमंजस में पड़ गए- ''जिस समस्या का समाधान इनके राजा के पास नहीं, बेचारी मालकिन क्या करेगी?''

फिर भी दासियों के ज्यादा कहने पर वह श्रेष्ठी शालिभद्र के महल में पहुंचे। व्यापारियों ने महल की भव्यता को देखा। दासियों ने महल का परिचय देते हुए कहा- ''हम लोग तो प्रथम मंजिल पर ही रहती हैं। दूसरी मंजिल में हमारे मुनीम व उनके परिवार रहते हैं।'' व्यापारी अब तीसरी मंजिल पर पहुंचे। यह शालिभद्र की माता का निवास था। दासियों ने कहा- ''यह हमारी स्वामिनी है, जिनका परिचय हमने

आपको दिया था।''

सेठानी भद्रा ने व्यापारियों का अभिवादन किया। यथोचित अतिथि सत्कार करने के पश्चात् पूछा- ''भैया! आपने मेरे यहां पधारकर अनुकंपा की है। मैं तो किसी योग्य नहीं कि आपका सम्मान कर सकूं। पर, मेरे योग्य जो सेवा हो बताएं, मैं यथा शक्ति पूर्ण करने की चेष्टा करूंगी।''

व्यापारियों के मुखिया ने बताया- ''बहिन! हम नेपाल देश के रत्नकम्बल बेचने आए हैं, हर कम्बल की कीमत सवा लाख स्वर्ण-मुद्राएं है। यहां हमारा एक भी कम्बल नहीं बिका। इसी बात को लेकर हम दुःखी हैं, इसलिए शालिभद्र से मिलना चाहते हैं।''

व्यापारियों की बात सुनकर भद्रा बोली- आप रत्नकम्बल मुझे ही दिखा दें। शालिभद्र तो अभी छोटा बच्चा है। वह व्यापार के योग्य नहीं हुआ। फिर यह बताएं कि आपके पास कितने रत्नकम्बल हैं?''

व्यापारियों ने कहा- ''सोलह हैं।''

भद्रा ने कहा- ''तुमने मुझे अजीब मुसीबत में डाल दिया है। मेरी बत्तीस पुत्र वधुएं हैं। अब सोलह कम्बल हैं। मैं बाकी सोलह को क्या दूंगी? अभी सोलह को तो रख दो।''

व्यापारी ने देखा और सुना। उन्हें लगा कि वह किसी स्वर्गलोक में घूम रहे हैं। क्या दे? कैसे देना है? कैसे यहां के लोग हैं? हमारा अनुमान गलत निकला। हमें भारत के प्रति अपनी धारणा बदलनी है।'

व्यापारियों ने सोलह रत्नकंम्बल एक स्थान पर रख दिए। भद्रा ने मुनीम को बुलाकर कहा- ''इन कम्बलों की जो कीमत बनती है, भण्डारी जी से कहकर इन्हें दे दीजिए।''

व्यापारियों का सारा माल बिक गया। अब वह नगर की चहल पहल देखने में मस्त थे। सुबह उनका राजगृह से प्रस्थान था। उधर रानी चेलना ने रत्नकम्बल के लिए इतनी जिद पकड़ी कि राजा श्रेणिक ने व्यापारियों को फिर ढूंढ़ा। व्यापारी आए। राजा श्रेणिक को वन्दन किया। उन्हें योग्य तोहफे प्रस्तुत किए। राजा श्रेणिक ने व्यापारियों से कहा-हमें एक रत्नकम्बल की आवश्यकता है, वह दीजिए-

व्यापारी ने प्रार्थना की- ''राजन्! रत्नकम्बल तो आपकी कृपा से एक ही सेठानी भद्रा ने खरीद लिए हैं। अब कोई कम्बल बाकी नहीं। हम जब पुनः आएंगे तब लाकर देंगे।'' राजा श्रेणिक को व्यापारियों की बात पर पहले विश्वास न हुआ, फिर उसने भद्रा सेठानी का पता किया और एक कम्बल उसी से खरीदने का मन बनाया। राजा श्रेणिक मंत्री व पुत्र अभयकुमार के साथ भद्रा के महल में पहुंचा। भद्रा ने राजा का स्वागत किया। आने का कारण पूछा। राजा ने कहा- ''आपके पास जो सोलह कम्बल हैं उनमें से एक कम्बल रानी चेलना को चाहिए। सो कीमत लेकर एक कम्बल दे दो।''

भद्रा ने प्रार्थना की- ''महाराज! आप कैसी बात करते हैं? हम अपनी महारानी पर हजार कम्बल भी कुर्बान कर सकते हैं पर अब समस्या यह आ गई है- मैंने उन कम्बलों के दो-दो टुकड़े कर अपनी बहुओं को दे दिये हैं, ताकि वह पांव पोंछ सकें।'' राजा हैरान था कि मैं तो एक कम्बल लेने में समर्थ नहीं पा रहा। यह है कि सोलह कम्बलों के इन्होंने टुकड़े कर दिए हैं।'' फिर राजा ने सोचा- 'महारानी का हठ तो पूर्ण करना ही है।' उन्होंने कहा-''आप हमें दो टुकड़े भेंट कर दें। हम उन्हें जोड़कर महारानी की इच्छा पूरी कर देंगे।''

भद्रा ने दासियों से कहा- पता करो कि कोई रत्नकम्बल मिल सकता है।'' दासी के इंकार करने पर भद्रा सेठानी ने प्रार्थना की- ''महाराज! बहुओं ने तो इन कम्बलों को पांव से पौंछकर फेंक दिया है।'' अब रानी की इच्छा पूर्ण होनी असंभव है।''

भद्रा ने राजा श्रेणिक को बताया- ''राजन्! यह धन वैभव आपका ही है। पर बात यह है कि मेरी बहुएं देवदूष्य वस्त्र पहनती हैं, क्योंकि मेरे पति देवगति में हैं। वे प्रतिदिन ३३ पेटियों में आभूषण, वस्त्र भेजते हैं। रत्नकम्बल का स्पर्श मेरी वधुओं को कठोर लगा, इसलिए उन्होंने उन्हें फेंक दिया। इस कारण मैं आपको रत्नकम्बल देने में असमर्थ हूं।''

राजा श्रेणिक ने सुना तो गहरे असमंजस में पड़ गए। भद्रा ने राजा को अपने घर पधारने की प्रार्थना की, जिसे श्रेणिक ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। राजा श्रेणिक भद्रा सेठानी के महल में पहुंचा। वह महल को देखकर दंग रह गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई इतना धनवान हमारी नगरी की शोभा को बढ़ा रहा है। भद्रा ने राजा को प्रणाम किया। फिर आदरपूर्वक अतिथि-कक्ष में ले आई। अतिथि-कक्ष क्या था? वह तो इन्द्रसभा की तरह था। राजा श्रेणिक शालिभद्र से मिलना चाहता था। इसी बात को ध्यान में रखकर माता भद्रा ने कहा- ''बेटा! नीचे आओ। श्रेणिक आए हैं।''

शालिभद्र आराम में मस्त था। उसने उपेक्षाभाव से कहा- ''माता जी! सारा व्यापार आप देखती हो। अब इस श्रेणिक में क्या खूबी है? इसे किसी अच्छे गोदाम में रखवा दो।''

शालिभद्र संसार में इतना अनभिज्ञ व भोगों में डूबा हुआ था कि वह अपने देश के राजा तक का नाम नहीं जानता था। माता ने पुनः आवाज लगाई- ''बेटा! नीचे आओ। हमारे स्वामी राजा श्रेणिक पधारे हैं। वह हमारे नाथ हैं, इन्हें प्रणाम करो।'' अब शालिभद्र की समझ में सारी बात आ गई। उसने आज तक सभी पर आज्ञा चलाई थी। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि हमारा भी कोई स्वामी है। शालिभद्र नीचे अतिथि-कक्ष में आया। उसने राजा श्रेणिक को प्रणाम किया। तब सभी ने भोजन किया। राजा श्रेणिक भद्रा सेठानी के अतिथि-सत्कार से बहुत प्रभावित हुआ। श्रेणिक राजा ने उसके सुन्दर, सुडौल शरीर, गौर वर्ण और असीम लावण्य रूप को देखा। वह अवाक् रह गया। ऐसा रूप, लावण्य व कोमल शरीर उस राजा ने कम ही देखा था। ज्यों ही शालिभद्र प्रणाम करने हेतु निकट आया त्यों ही श्रेणिक ने उसे गोद में भर लिया। पर शालिभद्र गुलाब के फूल की तरह सुकोमल था। राजा के शरीर की गर्मी से उसके शरीर में पसीने छूटने लगे। राजा ने उसे व्याकुल देखकर अपने करीबी आसन पर बिठाया, तब कहीं शालिभद्र को चैन आया। इस तरह भद्रा सेठानी के अतिथि-सत्कार को स्वीकार करता राजा आनन्दित हुआ घर आया और शालिभद्र पुनः अपने महल की सातवीं मंजिल में पहुंचा। 'नाथ' शब्द के चिंतन से उसके मन में उथल-पुथल मची हुई थी कि मेरा भी कोई स्वामी है। उस समय उस नगरी में धर्मघोष नाम के मुनि पधारे हुए थे। हजारों नागरिक सज-धजकर उनके दर्शन करने जा रहे थे। शालिभद्र ने सातवीं मंजिल पर बैठे बैठे यह नजारा देखा। उसे कोई भव्य समारोह लगा। उसने अपने नौकरों से पता करवाया कि क्या मामला है?''

नौकरों ने वन में मुनि-आगमन की शुभ सूचना दी। अन्य लोगों की तरह वह भी मुनि धर्मघोष का प्रवचन सुनने चला गया।[२] इस प्रवचन से उसके सारे संशय मिट गए। नाथ-अनाथ का मर्म समझ में आ गया। उसके मन में वैराग्य का अकुंर पैदा हो गया था। घर आकर उसने अपने मन के भाव अपनी माता से कहे। भद्रा सेठानी, जो हर प्रकार से सुखी थी, समाचार को सुनकर उस पर जैसे कोई बिजली गिर पड़ी हो, ऐसी स्थिति हो गई। आखिर उसका पुत्र शालिभद्र ही उसके जीने का उद्देश्य था। फिर भी माता भद्रा ने स्वयं को संभाला।

भद्रा सेठानी व्यापारी थी। दीन-दुनियां उसने देखी थी। उसने अपने अनुभव के आधार पर शालिभद्र

को परामर्श दिया-"अगर तुम साधु बनना चाहते हो, तो पहले इसका अभ्यास शुरू कर दो।"

जब पत्नियों ने समाचार सुना, तो वे भी दुःखी हुई। आखिर वह उन ३२ पत्नियों का एक मात्र पति था। उसके बिना अपना जीवन उन्हें नीरस लगने लगा। 'शालिभद्र' अपनी धुन का पक्का था। इसी धुन पर सवार होकर शालिभद्र ने रोजाना एक-एक पत्नी का त्याग करना शुरू कर दिया। सारा परिवार इस त्याग से प्रभावित हुआ। यह बात रिश्तेदारों तक पहुंच गई। रिश्तेदारों से यह बात घर-घर पहुंच गई। इसी नगर में धन्ना सेठ, जो शालिभद्र का जीजा था, वह भी सम्पन्नता से रहता था। जब शालिभद्र की बहन सुभद्रा को अपने भाई शालिभद्र के साधु बनने की बात का पता चला तो उसे बहुत दुःख हुआ। शालिभद्र के रोजाना एक पत्नी त्याग का समाचार भी उसे मिल चुका था।

इन सभी समाचारों के कारण सुभद्रा मानसिक रुप से दुःखी रहने लगी। एकदा धन्ना को उसकी पत्नियां स्नान करा रही थीं। सुभद्रा को उस समय धन्ना ने पूछा- "क्या बात है? आजकल आप इतनी दुःखी रहती हैं?"

मेरा भाई साधु बनने जा रहा है। अभ्यास के तौर पर वह रोजाना एक पत्नी, एक शय्या का त्याग कर रहा है।"-सुभद्रा ने उत्तर दिया।

धन्ना सेठ ने कहा-"तुम्हारा भाई बहुत ही कायर है। यदि दीक्षा ही लेनी है तो फिर एक-एक पत्नी का त्याग क्यों करता है? सभी को एक ही समय क्यों नहीं त्यागता?"

धन्ना की बात सुभद्रा को तीर की भांति चुभ गई। उसने उसी क्षण अपने पति को ताना मारा- "पतिदेव! कहना बहुत सरल है, पर करना उतना ही कठिन है। आप क्या इसी तरह मुझे छोड़ सकते हैं? अगर आप ऐसा करके दिखाएं, तब आपको पता चले।"

पत्नी का शब्द-बाण धन्ना के कलेजे में लग गया। वह उस समय स्नान की तैयारी में पत्नी से मालिश करवा रहा था। वह स्नान पीठ से सहसा उठ खड़ा हुआ।

"लो, यह मैं चला, तुम सभी मेरे सामने से हट जाओ। मैंने तुम्हारा त्याग कर दिया है।" धन्ना के भी आठ पत्नियां थीं। सभी पत्नियां देखती रह गईं। अन्य पारिवारिक जनों ने भी बहुत प्रयत्न किया, सभी समझाने में असफल रहे। धन्ना सीधा अपने ससुराल शालिभद्र के यहां पहुंचा। उसने पुकारते हुए कहा- "यह कैसी कायरता है, अरे शालिभद्र अगर साधु बनना है तो सभी कुछ एक ठोकर से त्यागो। देखो, मैंने भी ऐसा किया है। अब बहुत देर हो चुकी है। जीवन की क्षण-भंगुरता को पहचानो। चलो, हम दोनों प्रभु महावीर के चरणों में दीक्षा ग्रहण करें।"

शालिभद्र ने अपने बहनोई का सुझाव मानते हुए समस्त पत्नियों का त्याग कर दिया। माता भद्रा ने न चाहते हुए अपने प्रिय पुत्र शालिभद्र को साधु बनने की आज्ञा प्रदान की। दोनों प्रभु महावीर के समवसरण में पहुंचे। प्रभु महावीर को वन्दना की और साधु बन गए।

धन्ना और शालिभद्र का भिक्षु जीवन उत्कृष्ट था। जैन इतिहास में अभयकुमार जैसी किसी की बुद्धि नहीं मानी जाती। शालिभद्र जैसा धनवान नहीं माना जाता। धन्ना जैसा तपस्वी नहीं माना जाता। दोनों मिलकर तपस्या, स्वाध्याय द्वारा अपनी आत्मा को निर्मल करते, उनके लगातार मासिक, द्विमासिक व त्रैमासिक तप चलते रहे।

एक बार प्रभु महावीर अपने श्रीसंघ सहित राजगृह पधारे। शालिभद्र भी उनके साथ था। उनके एक महीने का पारणा था। उन्होंने भगवान महावीर को नमस्कार किया और विधि अनुसार भिक्षा ग्रहण

करने की आज्ञा मांगी।

प्रभु महावीर ने कहा- "देवानुप्रिय! आज तुम्हारा पारणा तुम्हारी माता के हाथ से होगा।"

मुनि शालिभद्र पारणा हेतु अपने ही घर पहुंचे। माता व अन्य लोगों ने कोई ध्यान न दिया। इसका प्रमुख कारण यह था कि शालिभद्र शरीर तप के कारण इतना सूख गया था कि कोई भी उन्हें पहचानने में असमर्थ था। शालिभद्र बिना भिक्षा ग्रहण किए वापस आ रहे थे कि उसी समय रास्ते में उन्हें एक ग्वालिन मिली। मुनि को देखकर उसके हृदय में वात्सल्य भाव उमड़ आया। वह रोमांचित हो गई। उसके स्तनों से दूध की धारा निकलने लगी। उसी ग्वालिन ने मुनि शालिभद्र से दही लेने का प्रेमपूर्वक आग्रह किया। मुनि भिक्षा लेकर स्व-स्थान पर आए। पारणा किया।

फिर प्रभु महावीर से पूछा- "आप कहते थे कि मेरा पारणा मेरी माता के यहां से होगा। पर उन्होंने मुझे कोई भिक्षा नहीं दी। यह भिक्षा मुझे एक अहीरन ने दी है।"

सर्वज्ञ महावीर ने कहा- "भद्र! यही तेरी पूर्वभव की माता थी। तू पूर्वजन्म में इसका पुत्र था। उस जन्म में यह एक गरीब महिला थी। इसका पति नहीं था। एक बेटा था। लोगों के घरों में काम-काज कर गुजारा करती थी। घर में पीछे इसका बेटा पशु चराता। एक बार कोई त्यौहार था। सारे गांव में खीर बनी थी। एक इस अहीरन का घर था, जिसमें खीर का अभाव था।

इसी अवस्था में तुम्हारा मन खीर खाने को ललचा रहा था। उस माता ने पड़ोसियों से दूध व चावल मांगकर तुम्हें खीर बनाकर दी। खीर को थाली में पलटकर वह काम पर चली गई। थाली तुम्हारे सामने थी। खीर गर्म थी। तुम खीर को ठण्डा करने के प्रयास में खीर को किनारों की ओर कर रहे थे। इस अवसर पर एक मासखमण के तपस्वी मुनिराज आ पहुंचे। तुमने स्वयं भूखे रहकर उस खीर को मुनिराज को अर्पण कर दिया। इसी सुपात्रदान के कारण तुम्हें ऐसी ऋद्धि व सुख-सम्पदा के सब साधन मिले। अब दान देने वाला बालक आज का शालिभद्र मुनि है। अहीरन तुम्हारी पूर्वभव की माता है। तुम्हें देखते ही उसके मन में जो मातृभाव जागृत हुआ, यह तुम्हारे पूर्वभव के संबंधों के कारण हुआ है। शालिभद्र प्रभु महावीर के समाधान से संतुष्ट हुए।

शालिभद्र का समाधिमरण

प्रभु महावीर की आज्ञा लेकर शालिभद्र ने वैभारगिरि पर्वत पर जाकर अनशन किया। भद्रा माता दर्शन हेतु आई। प्रभु महावीर ने दीक्षा से लेकर अब तक बीती सारी घटनाएं माता भद्रा से कह डाली। माता को अपार वेदना हुई। वह वैभारगिरि पर्वत पर पहुंची। पुत्र के तप के प्रभाव के कारण कृश बनी काया को देखकर और समाधिमरण अवस्था में देखकर वह व्याकुल हो उठी। उस भद्रा ने सब प्रकार के दुःख देखे थे। यह दुःख बहुत दिल हिलाने वाला था। वह दहाड़ मारकर रोने लगी। तभी वहां राजा श्रेणिक आ गए। उसने मुनि को प्रणाम किया। माता को सांत्वना दी। शालिभद्र आयु पूर्ण कर सर्वार्थसिद्धि देवलोक में देव बने। इसी प्रकार धन्ना ने भी इसी लोक में देव आयुष्य बांधा।[5]

दोनों का सांसारिक जीवन जितना भोगों में डूबा था, उतना त्यागमय जीवन त्याग की उत्कृष्टता लिए हुए था। प्रभु महावीर ने यह वर्षावास राजगृही में बिताया। हजारों प्राणियों का कल्याण किया।

सत्तरहवां वर्ष (प्रभु महावीर का पंजाब-सिन्ध के क्षेत्र को पावन करना)

राजगृह का चातुर्मास सम्पन्न कर प्रभु महावीर अपने शिष्य शिष्याओं के विशाल परिवार सहित